

निरुह्यते SARVADARĢANAS. 177, 12. 164, 4. fgg. BHAG. 6, 20. — 4) *verhüllen, verdecken*: निरुहं गगनं सर्वं व्यधं मेघैः समततः MBH. 13, 2069. HARIV. 8782. R. 5, 8, 24. SUGR. 1, 23, 2. VARĀH. BRH. S. 24, 15. 28, 6. 47, 26. RĀGA-TAR. 1, 369. BHĀG. P. 2, 9, 37. BHATT. 7, 70. — 5) *erfüllen, anfüllen*: वाष्पनिरुहकाण्ठी R. GORR. 2, 123, 24. BHĀG. P. 6, 14, 50. धूपगन्धनिरुह (स्थान) MBH. 14, 1921. खगपदतैः पर्णानिरुहं नीलकामलैः (वनम्) R. GORR. 2, 98, 5. वाग्निशाला: — निरुहः मक्षिपैरिव RĀGA-TAR. 4, 163. BHĀG. P. 3, 17, 17. — 6) *unterdrücken so v. a. verschwinden machen* CIG. 4, 55. युगे युगे भवत्येते सर्वे दत्तादयो नृपाः । पुनश्चैव निरुह्यते *und verschwinden wieder* HARIV. 112 = VP. bei Muir, ST. I, 27, N. 45. अहो राजनिरुहः कालेन हृदि ये कृताः BHĀG. P. 9, 3, 32. — 7) *niruh so v. a. अपरुह verstossen* PĀNĀV. Br. 9, 1, 9. KĀTH. 13, 5. — 8) *niruh* MBH. 3, 962 fehlerhaft für *niruh* (wie schon WESTERGAARD vermuthet hatte), *niruh* 13, 4530 fehlerhaft für *niruh*; die Bomb. Ausg. hat an beiden Stellen die richtige Lesart. *niruh* 2, 163 wird wohl auch unrichtig sein. — Vgl. *niruh* fgg., *nirah* fgg. — caus. 1) *einschliessen*: वायुं निराधयेत् Verz. d. Oxf. H. 234, a, 31. 33. — 2) *verschiessen lassen*: दारान् (!) RĀGA-TAR. 3, 428.

— उपनि *einsperren, einschliessen, eintreiben* पशून् CAT. Br. 3, 7, 3. — संनि 1) *zurückhalten, festhalten*: *रुह* MBH. 3, 1613. 6, 1964 (सं निरुहेषु ed. Bomb.). 7, 933. 4433. स्वकर्मभिर्मानवं संनिरुहम् 13, 2956 = 3, 12728, wo fälschlich स्वकर्मभिर्मानवंसंनिरुहे gelesen wird. — 2) *hemmen, unterdrücken, aufheben*: श्रुतिश्च संनिरुह्यते पुरा तवेह MBH. 12, 12082. कामक्रोधस्य लोभस्य (मोक्षस्य die ältere Ausg.) संनिरुहस्य मेधया HARIV. 11696. यद्यपि न संनिरुह्यते दुःखम् WILSON, SĀMKAJAK. S. 10. प्राणायामैः संनिरुहपटुर्गः BHĀG. P. 4, 23, 8. प्राणायामौ संनिरुह्यात् 7, 13, 32. — 3) *einschliessen, gefangen halten* CĒVETĀCV. Up. 4, 9. HARIV. 10230. BHĀG. P. 9, 13, 22. Verz. d. Oxf. H. 236, a, 2. अग्निहोत्रं संनिरुहामि so v. a. *zusammengeschürt* R. 7, 24, 10. 36, 5. (vor der Aussenwelt) *verschiessen*: संनिरुह्येन्द्रियग्रामम् Spr. 5161. पञ्चेन्द्रियस्य ग्रामस्य नवद्वारस्य — संनिरुहस्य HARIV. 11696. — 4) *erfüllen, anfüllen, voll machen*: देहेन तस्य मन्त्रस्य — संनिरुहो मकारः स शैलेनेव लक्ष्यते HARIV. 4733. रोमभिः संनिरुहः MBH. 12, 87. — Vgl. *niruh* 1, 10. *रुह*.

— परि 1) *einschliessen*: इयमेवैनमर्चिभ्यां परिरोधमानयति TBH. 3, 9, 13, 3. — 2) *Jmd zurückhalten* Spr. 971. — 3) *anfüllen*: वाष्पपरिरुहान् R. GORR. 2, 16, 38. 7, 24, 26. — Vgl. *परिरोध*.

— प्र 1) *Jmd zurückhalten*: माता मे प्ररुणाहि (संरुणाहि SĪV. 3, 82) माम् MBH. 3, 16830. — 2) *hemmen, sperren*: अतीर्थेन न्वा अयमध्वरुणः प्ररुणात् CAT. Br. 11, 4, 2, 14. प्राणान् 12, 4, 2, 6. PĀNĀV. Br. 13, 4, 11.

— संप्र pass. *ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen*: *रुह्यते* im Gegens. zu *पुष्यते* HARIV. 11778. समवरुह्यते die neuere Ausg.

— प्रति 1) *abhalten, zurückhalten, hemmend entgegenreten, sich widersetzen*: तं यः प्रतिरुह्येयशः स प्रतिरुह्येतस्मान् प्रत्येति स AIR. Br. 6, 34. TS. 6, 4, 2. 2. प्रतिरुह्य गुरुम् M. 11, 88. MBH. 3, 7144. अयोऽन्यं प्रत्यरुह्यताम् BHĀG. P. 10, 44, 4. प्रतिरुह्य R. 4, 60, 3. देवं पुरुषकारेण प्रतिरोडुम् R. GORR. 2, 20, 9. अप्रतिरुहेन प्रज्ञानेन *ungehennt* BHĀG. P. 2, 9, 24. अप्रतिरुहचक्र 4, 16, 27. यज्ञश्चेत्प्रतिरुहः स्यादेकेनाङ्गेन यज्वनः

*unterbrochen, gestört* M. 11, 11. — 2) *einschliessen, einsperren*: नगरे प्र-तिरुहः MBH. 3, 1214. धातरं पूर्वतः हि यः । अश्वभिः प्रत्येति सति — विले R. 4, 33, 3. *absperren*: प्रतिरुह्य रणाग्रिम् MBH. 3, 7320. die Sinne u. s. w. (gegen die Aussenwelt): प्रतिरुह्येन्द्रियाणि 823. प्रतिरुह्येन्द्रिय-प्राणमनोबुद्धिः BHĀG. P. 1, 18, 26. — 3) *verhüllen, verdecken*: ते दिशो विदिशः सर्वं प्रतिरुह्य प्रकारिणः MBH. 3, 12114. HARIV. 13611. — Vgl. *प्रतिरोडु* fgg.

— वि 1) *med. Widerstand finden*: पुरस्ताद्यवानां सवित्रा विरुह्यते । सवित्रैव विरुह्य ब्रह्मणा यवानादधते *durch S. finden sie Widerstand vor dem Getraide, durch das Br. nehmen sie es in Besitz* TBH. 1, 8, 1, 1.

— 2) *विरुह्यते und ० ति a) streiten, in Feindschaft leben, Feindschaft beginnen, kämpfen mit* (instr., instr. mit सह, gen., loc., acc. mit प्रति): नानुरुह्ये विरुह्ये वा न द्वेष्टि न च कामये MBH. 12, 9349. यज्ञाकस्माद्विरुह्यते 6275. Spr. 3276. अयोऽन्यं विरुह्यते विरुह्यते ed. Bomb.) MBH. 1, 1357. व्यरुह्यत परस्परम् VĀJU-P. bei Muir, ST. I, 31, N. 56. ब्राह्मणैश्च विरुह्यते MBH. 3, 1063. HARIV. 7313. Spr. 2836. 4288. 4922. BHĀG. P. 10, 1, 68. MĀRR. P. 27, 10. वन्धुभिश्च विरुह्यतु (निरु<sup>०</sup> ed. Calc.) MBH. 13, 4530. 4572. 4577. R. 7, 61, 8. चापस्य कोकेन विरुह्यतः VARĀH. BRH. S. 88, 24. मृत्युर्धुवस्ते ऽयं मया विरुह्य R. 3, 44, 31. तया सह विरुह्यते MBH. 2, 227. तत्कार्यं सह पित्राहं विरुह्येयम् R. GORR. 2, 23, 17. fg. तत्तमं न विरोडुं ते सह तेन 4, 14, 19. न च ते ऽहं विरुह्यामि कस्मान्मो कृतवानस्मि 16, 19. यस्मिन्विरुह्य दशकंधर आर्तिमार्क्षत् BHĀG. P. 2, 7, 23. इन्द्रेण — अस्मान्प्रति (so trennen wir) विरुह्यता R. 5, 41, 8. *bekämpfen*: ब्रह्म (acc.) तत्र (nom.) यत्र विरुह्यतीह MBH. 12, 2782. *विरुह* im Streite liegend, in Feindschaft lebend, feindselig gestimmt, verfeindet R. 2, 1, 13. 4, 33, 9. KĀM. NĪTIS. 13, 55. Spr. 123 (zugleich eingeschlossen). 233. VARĀH. BRH. S. 93, 46. 97, 12. KĀTHĀS. 39, 229. 43, 306. निरुहः विरुहानां रतिता नमता पुनः 46, 158. 74, 101. RĀGA-TAR. 3, 452. HIR. ed. JOHNS. 2126. परस्परविरोधाः R. 1, 7, 8 (11 GORR.). राधेया विरुहस्य तव 3, 41, 31. 4, 37, 18. 5, 48, 13. Spr. 1679. मदलेन विरुहाय *dem, der sich meiner Macht widersetzt*, R. 2, 23, 25. तपश्चाराणां मृदुसौम्यशीलिनां सदा विरुहं ब्रह्म रावणम् 5, 89, 33. अविरोहस्ततस्तस्य तपोन समपद्यत MBH. 12, 4271. KĀTHĀS. 60, 142. परस्परविरोधाः RAGH. 10, 81. राजविरोधानाम् Spr. 4871. RĀGA-TAR. 4, 165. von Planeten Verz. d. Oxf. H. 86, a, 1 v. u. *feindselig so v. a. unerwünscht, widerwärtig, gehässig u. s. w.*: लक्षणा R. 5, 27, 32. चेष्टित KĀTHĀS. 74, 161. ०शनं = गालि H. 272. विरुहमकरोन्मयि KĀTHĀS. 20, 129. 3, 4. 44, 123. मा स्यादाज्ञकुले किंचिद्विरुहम् 49, 132. अ<sup>०</sup> 71, 210: विरुहमिदं त्वयानुष्ठितं यन्मह्यं प्रदाय कन्यान्यस्मै प्रदत्तेति PĀNĀV. 130, 1. 39, 25. यदि त्वां प्रति विरुहमाचरामि 213, 20. अन्यथा विरुहं ते फलिष्यति (अन्यथा ते विरुहं फलं भविष्यति v. l.) HIR. 38, 18. विरुहधी *Feindseliges im Sinne habend, schadenfroh* RĀGA-TAR. 1, 303. अस्मद्विरुहं कुरुते KĀTHĀS. 43, 167. परविरुहेषु नेतस्-कृते मन्त्रायाः 17, 149. कर्म लोकविरुहम् R. 3, 33, 4. — b) *in Widerspruch stehen mit Etwas, einen Widerspruch bilden*: एतद्विरुह्यते MBH. 13, 5595. CĀMKA. zu BRH. ĀR. Up. S. 39. 94. NILAK. 137. Muir, ST. 4, 221. न च केन च धर्मेण (so die ed. Bomb., NILAK. erwähnt aber auch die Lesart der ed. Calc.) विरुह्यते प्रज्ञा इमाः MBH. 8, 2074 (vgl. R. 4, 17, 33). सेयं भगवतो माया यन्त्रेण विरुह्यते BHĀG. P. 3, 7, 9. यत्स्ववाचो वि-